❀ श्रीसद्गुरुदेवाय नमः ❀

पूजा के फूल

श्री परमहंस अद्वैत मत पब्लिकेशन सोसायटी (रजि०)

श्री आनन्दपुर धाम

आराधन

❀ आराधन ❀

टेकः- अमृत वेले गुरु दर्शन पाइये,
अपने गुरु जी पे बलि बलि जाइये।

1. परम पुरुष पूरण गुरु मेरे,
जिनके सिमरत सूख घनेरे;
स्वाँस स्वाँस में नाम ध्याइये,
अमृत वेले... ।।

2. गुरु मूरत का करिये ध्यान,
गुरु से माँगिये भक्ति दान;
गुरु चरणों में प्रेम बढ़ाइये,
अमृत वेले... ।।

3. अमृतमयी सतगुरु की वाणी,
आनन्ददायक सुख की खानी;
गुरु जी की वाणी हिरदय बसाइये,
अमृत वेले... ।।

4. सेवक बन गुरु सेवा करिये,
जन्म-मरण के दुःख सब हरिये;
सेवा कर अपने भाग मनाइये,
अमृत वेले... ।।

5. गुरु बिन कोई मीत न भाई,
लोक परलोक में संग सहाई;
गुरु आज्ञा में मन चित्त लाइये,
अमृत वेले... ।।

6. सतगुरु महिमा अगम अनन्त,
जिस का कोई न पावे अन्त;
निशिदिन गुरु जी की महिमा गाइये,
अमृत वेले... ।।

7. परमहंस सतगुरु अवतार,
'दासनदास' की यह ही पुकार;
पल पल साचा नाम जपाइये,
अमृत वेले... ।।

।। बोलो जयकारा बोल मेरे श्री गुरु महाराज की जय ।।

श्री गुरु महिमा

॥ बोलो जयकारा बोल मेरे श्री गुरु महाराज की जय ॥

❀ श्री गुरु महिमा ❀

॥ श्लोक ॥

साकार रूपं परमात्मनः हे
आत्मस्थितं तत् तव दर्शनं श्रीः ।
आनन्दसिन्धौ स्मरणं त्वदीशः
मधुरोपदेशं शं ते दयालोः ॥
चरणारविन्दे कोटिः प्रणामः
बद्धाञ्जलिभ्यो इव प्रार्थनैषा ।
वरदायकः यत् हस्तः त्वदीयः
शिरसा सदैव दृष्टिः कृपालोः ॥

अर्थात् हे श्री परमहंस दयाल जी महाराज! आप निराकार परमात्मा के साकार स्वरूप हैं। आपके पावन दर्शन करने से जीव आत्मस्थित हो जाता है, (आपके) स्मरणमात्र से मन आनन्द के महासागर में हिलोरें लेने लगता है, (आपके) मधुर उपदेश पर आचरण करने से आत्मकल्याण होता है।

आपके परम पुनीत चरणारविन्दों में कोटि-कोटि साष्टांग दण्डवत्-प्रणाम करके करबद्ध यह प्रार्थना है कि हे दीनबन्धो! आपका वरद हस्त दीन के शीश पर रहे और आप मुझ दास पर अपनी कृपादृष्टि सदैव बनाये रखें।

।। दोहा ।।

श्री परमहंस गुरुदेव जी,
निराकार साकार ।
जिनकी पद नख ज्योति से,
आलोकित संसार ।।
परम पुरुष पूरण धनी,
आनन्द घन सुख रूप ।
सर्वारम्भ में पूजिये,
पावन चरण अनूप ।।

।। चौपाई ।।

सतगुरु सच्चिदानन्द स्वामी ।
अगम[1] अगोचर[2] पुरुष अनामी ।।
परम दयालु महा उपकारी ।
त्रिगुणातीत[3] जगत हितकारी ।।

1.जहाँ तक जीव की पहुँच नहीं हो सकती; 2.जो इन्द्रियों की पहुँच से परे हो; 3.जो तीन गुणों—सत्, रज और तम से परे हो।

पूरब पुन्न फलें समुदाई ।
सतगुरु मिलें परम सुखदाई ।।
सतगुरु शरणी जो भी आये ।
प्रेम भाव से शीश झुकाये ।।
जीव को भक्ति पथ दर्शाते ।
किरपा कर सुख रूप बनाते ।।
देकर सत्य नाम की दीक्षा ।
सुमिरण की फिर देते शिक्षा ।।
सुरत को अन्तर्मुखी बनाते ।
भक्ति प्रेम की ज्योत जगाते ।।
मिट जाये मन का अंधियारा ।
घट भीतर हो तब उजियारा ।।

।। दोहा ।।

तम अज्ञान मिटाये कर,
दीन्हा आतम ज्ञान ।
सत मारग दिखलाइया,
सतगुरु परम सुजान ।।

।। चौपाई ।।

गुरु की आज्ञा धुर से आई ।
जो है बहुत अमोलक भाई ।।
गुरु की आज्ञा मानै जोई ।
ताको विघन न लागै कोई ।।
गुरु की आज्ञा फँद छुड़ावै ।
मानुष मुक्त रूप बन जावै ।।

हित चित्त से जो धारै कोई ।
गुरु प्रसन्नता पावै सोई ॥
सतगुरु वचन से उपजै ज्ञाना ।
बीसों-बिसवे[1] हो कल्याना ॥
यम की चाल चलै नहिं कोई ।
शरणागत जो गुरु का होई ॥
गुरु की ओट सदा उर धारी ।
रक्षा करते बन महतारी[2] ॥
गुरु सम दूजा को हितकारी ।
शरण पड़े की विपदा टारी ॥

॥ दोहा ॥

ऐसे सतगुरुदेव पर,
जाइये सद बलिहार ।

1.शत-प्रतिशत, निश्चयपूर्वक; 2.माता।

पल पल क्षण क्षण गाइये,
सतगुरु के उपकार ।।

।। चौपाई ।।

सतगुरु ऐसा कर्म कमायें ।
बन पारस निज रूप बनायें ।।
भीतर के सब मेटें दोषा ।
सहजे पाये चित्त सन्तोषा ।।
गुरु पद रज जो मस्तक लाये ।
सोया अपना भाग्य जगाये ।।
चरणामृत नित पान जो करता ।
काल का उस पर वश न चलता ।।
सत्य धरम की रीति सिखाते ।
निःस्वारथ हित प्रीति बढ़ाते ।।

मधुर वचन अमृत बरसायें ।
जीव हृदय मरु[1] को सरसायें[2] ।।
सतगुरु जी ने कीन्ही दाया ।
निज भक्तन को आन जगाया ।।
करने जीवों का निस्तारा ।
भक्ति मुक्ति का खोला द्वारा ।।

।। दोहा ।।

श्री आनन्दपुर की धरा,
तीरथ धाम बनाय ।
सतसंग सेवा नाम का,
डंका दिया बजाय ।।

1.मरुस्थल अर्थात् रेगिस्तान; 2.हरा-भरा करना।

।। चौपाई ।।

भक्ति पथ दर्शावन हेतू ।
प्रकटाया जो भव का सेतू ।।
विश्व शान्ति का केन्द्र बनाया ।
भक्ति प्रेम का पंथ चलाया ।।
तीर्थ महान जगत विख्याता ।
श्री सतगुरु इसके निर्माता ।।
फहराई निज धवल पताका ।
दसों दिशा फैला यश जाका ।।
अड़सठ तीरथ गुरु के चरणी ।
जाकी महिमा जाय न वरणी ।।

भक्ति की यहाँ सुरसरि धारा ।
आतम आनन्द ब्रह्म विचारा ॥
गुरु तीरथ जो मज्जन करता ।
तन मन पावन उसका बनता ॥
भव तरने का साधन दीन्हा ।
भक्ती मार्ग सुगम अति कीन्हा ॥

॥ दोहा ॥

श्री आरती-पूजा, सत्संग, सेवा,
सुमिरण और ध्यान ।
श्रद्धा सहित सेवन करे,
निश्चय हो कल्याण ॥

।। चौपाई ।।

श्रद्धा सहित श्री आरती पूजन ।
प्रातः सायं करे नित वन्दन ।।
शाश्वत आनन्द शान्ति पाये ।
निश्चय सुख में रहे समाये ।।
बड़भागी सतसंग में आये ।
हंस गति सोइ सहजे पाये ।।
सतसंगति फल अति शुभ मूला ।
गुरुमुख नहिं लागै भव शूला ।।
गुरु सेवा अहंकार मिटावै ।
सेवक-पद कोई जन पावै ।।

कर निष्काम भाव दृढ़ सेवा ।
पाइये चार पदारथ[1] मेवा ॥
स्वाँसों की वीणा पर साजै ।
मधुर नाम की सरगम बाजै ॥
सुरत शबद के संग मिलावै ।
आतम रस को गुरुमुख पावै ॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु के चरणार से,
जोड़ सुरत की डोर ।
पल पल ध्यान लगाइये,
जैसे चन्द्र चकोर ॥

1.धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

।। चौपाई ।।

जाके मस्तक लिखे विधाना ।
भेटहिं सतगुरु कृपानिधाना ।।
गुरु दर्शन फल गुरुमुख पावै ।
सहजे आतम रूप लखावै ।।
सतगुरू मिलन वसंत समाना ।
अति आनन्द, न जाये बखाना ।।
मन मन्दिर में गुरु को बसाओ ।
तिलक पुष्प और हार चढ़ाओ ।।
सतगुरु को पुनि चँवर झुलाओ ।
श्रद्धा से नित शीश झुकाओ ।।

भक्ति प्रेम के दीप जगाओ ।
घट में परम प्रकाश फैलाओ ।।
सतगुरु को नित भोग लगाओ ।
सीत-प्रसाद[1] स्नेह हित पाओ ।।
प्रेम सहित मिल महिमा गाओ ।
गुरु पूजा कर भाग मनाओ ।।

।। दोहा ।।

सात द्वीप नौ खंड में,
सतगुरु सम नहिं देव ।
जिनकी किरपा से मिले,
परमारथ का भेव ।।

1.भोग-प्रसाद।

।। चौपाई ।।

दिव्य स्वरूप सकल सुखकारी ।
सतगुरु भक्ति के भंडारी ।।
शीतल शान्त महा वैरागी ।
संगति पाये परम अनुरागी ।।
सतगुरु सकल ब्रह्मण्ड के स्वामी ।
रहिये सदा सदा अनुगामी ।।
हिरदय दृढ़ गुरु चरण भरोसा ।
भक्ति कमाये अति सहरोसा[1] ।।
सेवक मन की मति को त्यागे ।
गुरु की मति में रहे अनुरागे ।।

1.प्रसन्नता के साथ।

तिस पर सतगुरु होयँ दयाला ।
भक्ती धन से करें निहाला ॥
तिस गुरुमुख के कारज रासा ।
गुरु चरणन में मिले निवासा ॥
भक्तिमान लागै गुरु प्यारा ।
लोक सुखी परलोक सँवारा ॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु की महिमा अनन्त,
किस विधि गाई जाय ।
अगम अगोचर पारब्रह्म,
सन्त रूप धरि आय ॥

।। चौपाई ।।

सतगुरु सत्य रूप अविनाशी ।
मंगलकारी सहज सुखराशी ।।
परमारथ पथ के उन्नायक[1] ।
सदा हितैषी परम सहायक ।।
चित्त गुरु चरणन दृढ़ करि राखो ।
प्रीत-प्रसाद मधुर अति चाखो ।।
प्रीत का बन्धन गुरु संग बाँधो ।
पल पल गुरु से आशिष माँगो ।।
ब्रह्म मुहूर्त नित उठ जाओ ।
गुरु चरणन का ध्यान लगाओ ।।
श्री गुरु महिमा जो नित गाये ।
आतम सुख को सहजे पाये ।।

1.उन्नति की ओर ले जानेवाले।

गुरु किरपा काटै भव रोगा ।
अति दुर्लभ पाइये संजोगा ।।
गुरु परमेश्वर एकै होई ।
जानै विरला गुरुमुख कोई ।।

।। छंद ।।

संस्कारी जीव ही,
सतगुरु-शरण में आते हैं ।
आज्ञा को शिरोधार्य कर,
भक्ति के धन को पाते हैं ।।

ऐसे विरले प्यारे गुरुमुख,
भव के तट जब जाते हैं ।
गुरु नाम की नौका बिठा,
निजधाम को ले जाते हैं ।।

स्वामी सच्चिदानन्द सतगुरु,
अलख[1] रूप लखाते हैं ।
अंश अपने अंशी से मिल,
एकरूप हो जाते हैं ।।

दान निज भक्ति का देकर,
सतगुरू हरषाते हैं ।
जयकार बोलें मिल के सारे,
'दास' बलि बलि जाते हैं ।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

।। बोलो जयकारा बोल मेरे श्री गुरु महाराज की जय ।।

1.जो देखा नहीं जा सकता।

श्री आरती स्तोत्र

॥ बोलो जयकारा बोल मेरे श्री गुरु महाराज की जय ॥

❀ आरती ❀

ॐ जय श्री जगतारण,
स्वामी जय जय श्री जगतारण ।
शुभ मग के उपदेशक,
शुभ मग के उपदेशक,
यम - त्रास निवारण ॥
ॐ जय श्री जगतारण ॥

1. परमारथ हित अवतार जगत में,
गुरु जी ने है लीन्हा;
मेरे स्वामी जी ने है लीन्हा ।
हम जैसे भागियन को,
हम जैसे भागियन को,
गृह दर्शन दीन्हा ॥
ॐ जय श्री जगतारण ॥

2. कलि कुटिल जीव निस्तारण को,
प्रभु सन्त रूप धर के;
स्वामी सन्त रूप धर के ।
आतम को दर्शावत,
आतम को दर्शावत,
मल धोये हैं मन के ।।
ॐ जय श्री जगतारण ।।

3. आप[1] पाप त्रय-ताप[2] गये,
जो गुरु शरणी आये;
मेरे स्वामी शरणी आये ।
गुरु जी से लाल अमोलक,
स्वामी जी से लाल अमोलक,
तिस जन ने पाये ।।
ॐ जय श्री जगतारण ।।

1.आपदा, 2.तीन ताप — दैविक, भौतिक और आध्यात्मिक।

4. सहज-समाधि, अनाहत-ध्वनि,
जप अजपा बतलाये;
स्वामी अजपा बतलाये ।
प्राणायाम की लहरें,
प्राणायाम की लहरें,
मेरे मन भाये ।।
ॐ जय श्री जगतारण ।।

5. हरि किरपा कर जनम दियो,
जग मात पिता द्वारे;
स्वामी मात पिता द्वारे।
उनसे अधिक गुरु जी हैं,
उनसे अधिक गुरु जी हैं,
भव - निधि से तारें ।।
ॐ जय श्री जगतारण ।।

6. तले[1] की वस्तु गगन ठहरावे,
गुरु के शबद शर से;
सतगुरु के शबद शर से ।
सो सूरा सो पूरा,
सो सूरा सो पूरा,
बल में वह बरते ।।
ॐ जय श्री जगतारण ।।

7. तत्-स्नेह[2], प्रेम की बाती,
योग अगन जिनके;
स्वामी योग अगन जिनके ।
आरती लायक सो जन,
आरती लायक सो जन,
जो हैं शुद्ध मन के ।।
ॐ जय श्री जगतारण ।।

1. पिण्ड देश में रमी हुई सुरत, 2. तत्त्व-ज्ञानरूपी घी।

8. श्री परमहंस सतगुरु जी की आरती,
अष्टपदी रच के;
स्वामी अष्टपदी रच के ।
'साहिबचन्द' ने गाई,
तेरो दास ने गाई,
पद रज सज करके ।।
ॐ जय श्री जगतारण ।।

जय श्री जगतारण ।।
मैं वारी जय जय श्री जगतारण ।।
बलिहारी जय जय श्री जगतारण ।।
सतगुरु जी जय जय श्री जगतारण ।।
भगवन् जी जय जय श्री जगतारण ।।

शुभ मग के उपदेशक,
शुभ मग के उपदेशक,
यम - त्रास निवारण ।।
ॐ जय श्री जगतारण ।।

❀ विनती ❀

॥ दोहा ॥

श्री परमहंस दयाल जी,
पूरण सुख के धाम।
बार बार दण्डवत करूँ,
कोटिन कोटि प्रणाम॥1॥

हाथ जोड़ विनती करूँ,
सतगुरु कृपानिधान।
सेवा अपनी दीजिये,
और भक्ति का दान॥2॥

सुखदाता दुःखभंजना,
सतगुरु तुम्हरो नाम।
नाम अमोलक दीजिये,
भक्ति करूँ निष्काम॥3॥

नाव बनाई शब्द की,
बहुत किया उपकार।
भवसागर में डूबते,
लीन्हे जीव उबार।।4।।

तुम बिन कोई मीत नहीं,
स्वारथ का संसार।
बिन स्वारथ सतगुरु करें,
निशिदिन पर उपकार।।5।।

मैं निर्बल अति दीन हूँ,
तुम समरथ बलवान।
सब विधि मम रक्षा करो,
दीनबन्धु भगवान।।6।।

बिरद सम्भारो नाथ जी,
शरणागत प्रतिपाल।
बाँह गहे की लाज है,
मेरी करो सम्भाल ।। 7 ।।

समरथ सतगुरुदेव जी,
लीन्ही तुमरी ओट।
तुमरी कृपा से मिटत हैं,
जन्म जन्म के खोट ।। 8 ।।

मैं अपराधी जीव हूँ,
नख शिख भरा विकार।
अपनी दया से सतगुरु,
कीजै भव से पार ।। 9 ।।

भटक भटक कर आइया,
पर्या तुम्हरे द्वार।
चरण-शरण में राख लो,
अपनी किरपा धार।। 10 ।।

तुझसा मुझको है नहीं,
मुझसे तुम्हें अनेक।
राखो चरणन छाँव में,
गही तुम्हारी टेक।। 11 ।।

टेक एक प्रभु आपकी,
नहीं भरोसा आन।
तुम्हरी किरपा दृष्टि से,
पाइये पद निर्वाण।। 12 ।।

अनिक जन्म भरमत रहियो,
पायो न बिसराम।
आया हूँ तव शरण में,
कृपा सिन्धु सुखधाम।।13।।

लिव श्री चरणन में लगे,
जैसे चन्द चकोर।
रैन दिवस निरखत रहूँ,
गुरु मूरत की ओर।।14।।

श्री गुरु चरण सरोज में,
राखूँ अपना शीश।
चाहूँ तुझ से मैं सदा,
प्रेम भक्ति बख़्शीश।।15।।

पत राखो मेरे साईयाँ,
दयासिन्धु दातार।
बार बार विनती करूँ,
सतगुरु तव चरणार।।16।।

पारब्रह्म सतगुरु मेरे,
पूरण सच्चिदानन्द।
नमस्कार प्रभु आपको,
भक्तन के सुखकन्द।।17।।

श्री मात पिता सतगुरु मेरे,
शरण गहूँ किसकी।
गुरु बिन और न दूसरा,
आस करूँ जिसकी।।18।।

।। जयकारा, निस्तारा, धर्म का द्वारा, झूलेगी ध्वजा, बजेगा नक्कारा, सुनकर बोलेगा, सो निहाल होयेगा, बोल साचे दरबार की जय ।।

॥ बोलो जयकारा बोल मेरे श्री गुरु महाराज की जय ॥

❀ स्तोत्र ❀

जय सत्-चित्-आनन्द मूरति,
स्वामी जी के चरण वन्दनम् ।
जो दे उपदेश क्लेश नाशैं,
कलि के कलुष विभंजनम्[1] ॥1॥

जो ज्ञान-निधि विज्ञान-दायक,
घायकं सब दुष्कृतम्[2] ।
युतयोग[3] भोगहिं रोग जानैं,
सुख-दुःखं सम अरि-मितम् ॥2॥

1.जो कलियुग के सभी पापों का नाश करनेवाले हैं,
2.जो सभी बुरे कर्मों का विनाश कर देते हैं,
3.जो योगवृत्ति से युक्त हैं।

परमारथ पथ भेद वेद के,
खेद बिन जो दायकम् ।
शरणागत के भरम हत के,
सत् ही के कर लायकम्।।3।।

मलयदल-अमल[1] अचल पदाम्बुज[2],
सद्गुरु के जो ध्यावतम्।
सुख सुयश सुगति सुबुद्धि सुशान्ति,
बिन प्रयास सो पावतम्।।4।।

है जग जन्म सफल तिस का,
जो गुरु-पद रज मन लावहिं।
ज्यों पारस परसि कुधातु सुधरे,
त्यों फिर जन्म न आवहिं।।5।।

1.चन्दन-पत्र के समान निर्मल, 2.चरण-कमल।

दया के सिन्धु ज्यों, शीतल इन्दु ज्यों,
ॐ के बिन्दु ज्यों भासतम्।
तेजमय भानु ज्यों, विद्या की खान ज्यों,
अहनिशि ध्यान में वासतम्॥6॥

परम धर्म श्री सद्गुरु की सेवा,
विदित नरक निवारणम्।
जासु शब्द भव-बन्धन काटत,
समझ पड़त यही कारणम्॥7॥

सन्त महात्मा और बुध-जन[1],
वेद पुराण यही गावहिं।
प्रभु ते अधिक गुरु जो सेवत,
सो निश्चय प्रभु पावहिं॥8॥

1.बुद्धिमान् पुरुष।

शुक-सनकादिक ध्रुव-नारदादिक,
गुरु-उपदेश ते अमरणम्।
ऋषि मुनि जन प्राकृत[1] जग में,
ले दीक्षा[2] प्रभु सुमिरणम्।।9।।

गुरु-यश दिक्-पद[3] अहनिशि गावत,
दसहुँ दिशि भ्रम दुःख जारतम्।
गुरु-पद-जलज अलि मन जाको,
'साहिबचन्द' उच्चारतम्।।10।।

।। बोलो जयकारा बोल मेरे श्री गुरु महाराज की जय ।।

1. साधारण, 2. सद्गुरु-उपदेश अथवा गुरु-दीक्षा,
3. दस पदों वाली कविता।

❀ छन्द ❀

टेक :- स्वामी मेरा परमहंस महाराज,
विद्या सागर परम आनन्द।

1. आपने गुरु जी की सेवा कीन्ही,
उन से निर्गुण भक्ति लीन्ही।
गुरु जी को हिरदे बैठक दीन्ही,
हैं वे परम पुरुष आनन्द ।।

2. आपने ध्यान में लिव लगाई,
सकल ब्रह्म आतम जोत जगाई।
जीव अजीव ब्रह्म दरसाई,
होवे अज्ञान से ज्ञान आनन्द ।।

3. गुरु जी की महिमा अति अगम,
बुद्धि समझ न पावे गम।
हिरदे शुद्ध दृष्टि सम,
मस्तक दरशे सूरज चन्द ।।

4. गुरु जी की मधुर वाणी और पन्द[1],
शकर से ज़्यादा मीठी कन्द[2]।
करें सब सामय[3] उसे पसन्द,
सुने से मिटे दरद दुःख द्वन्द ।।

5. दर पर भले बुरे सब आवें,
इच्छा पूरण होकर जावें।
पाछे सबसे यही बतलावें,
प्रीति गुरु जी की मुझ पे बुलन्द[4] ।।

6. गुरु जी की किरपा सब पर भारी,
जो समझे वो है अधिकारी।
जो न समझे वो नाकारी,
आप हैं साचे और पाबन्द ।।

1.सदुपदेश, 2.मिश्री, 3.श्रोतागण, 4.ऊँची।

7. गुरु जी ने दुःख सुख एक सा माना,
सब घट आतम को पहचाना।
जिसने मता आपका जाना,
मिटाया उसके जग का फन्द ।।

8. स्वामी! गो हूँ मैं सेवा हीन,
पर हूँ किरपा के आधीन।
तुम्हरी चरण-शरण की लीन,
काटो क्लेश दुःख और द्वन्द ।।

9. भवसागर से हमें उबारो,
करुणा-जहाज़[1] बना कर तारो।
वैतरणी से पार उतारो,
सवारी देकर ज्ञान समन्द[2] ।।

1.दया का जहाज़, 2.घोड़ा।

10. गुरु जी की महिमा क्या कोई गावे,
जाकी बुद्धि पार नहीं पावे।
पर मन चित्त से शरणी आवे,
उसी को होवे सदा आनन्द ।।

11. गुरु जी की महिमा जग में फैली,
बँट रही धन मुक्ति की थैली।
दुनिया न समझे अलबेली,
बुद्धिहीन जीव मति मन्द ।।

12. गुरु जी की महिमा सब मिल गावो,
और अभिमान को दूर हटावो।
प्रेम की नदियाँ खूब बहावो,
जोड़कर कहै छन्द यह 'नन्द' ।।

।। बोलो जयकारा बोल मेरे श्री गुरु महाराज की जय ।।

❀ स्तुति ❀

पूरण सतगुरु ब्रह्म स्वरूप।
महिमा जिनकी अगम अनूप ॥1॥

पारब्रह्म गुरु सुख की खान।
पर उपकारी पुरुष महान ॥2॥

गुरु की महिमा अगम अपार।
वेद न पावें पारावार ॥3॥

गुरु समरथ गुरु कर्णधार।
जन जन का करते निस्तार ॥4॥

वचन गुरु के अमृत वाणी।
सुनत आनन्द रस पावे प्राणी ॥5॥

गुरु का वचन मेटे अज्ञान।
बख़्शे नाम रतन धन खान ॥6॥

सार शब्द गुरु का उपदेश।
मन अन्तर के मिटे क्लेश ॥7॥

जीव ब्रह्म का भेद बतावें।
सुरत शब्द का मेल करावें ॥8॥

गुरु मूरत का करिये ध्यान।
गुरु ऊपर जाइये कुर्बान ॥9॥

सब तीरथ गुरु चरणन माहीं।
चरण परस कलि मल धुल जाहीं ॥10॥

गुरु के चरण राखे उर धार।
हिरदै माहिं होय उजियार ॥11॥

भाग बड़े गुरु दर्शन पाये।
जन्म मरण के त्रास मिटाये ॥12॥

जो गुरु सेवा में चित्त लावे।
कलह क्लेश सभी मिट जावे ॥13॥

गुरु की सेवा सब सुख खान।
सेवक पावे दरगह मान ॥14॥

गुरु आज्ञा में रहे जो कोई।
तिस सेवक को दूख न होई ॥15॥

जप तप संयम करे अनेक।
गुरु बिन कबहुँ न होय विवेक ॥16॥

गुरु गोबिन्द एको कर जान।
गुरु सम दूजा और न मान ॥17॥

जिस पर होयँ गुरु दयाल।
भक्ति धन से करें निहाल ॥18॥

परमहंस सतगुरु अवतार।
चरण कमल पे सद बलिहार ।।19।।

'दासनदास' की एह अरदास।
राखो चरण कमल के पास ।।20।।

।। बोलो जयकारा बोल मेरे श्री गुरु महाराज की जय ।।

श्री आरती-पूजा सत्संग सेवा,
सुमिरण और ध्यान ।
श्रद्धा सहित सेवन करे,
निश्चय हो कल्याण ॥

पुस्तक मिलने का पता :-

आनन्द सन्देश कार्यालय

श्री आनन्दपुर धाम

पो0 श्री आनन्दपुर, ज़िला अशोक नगर (म0 प्र0), भारत

पिन: 473331

0320

SSDN108:1103A

मुद्रक:– आनन्द प्रिंटिंग प्रेस, श्री आनन्दपुर।